IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षागत वातावरण का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिप्रा गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज, जयपुर

नलिनी शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज, जयपुर

मुख्य शब्द – माध्यमिक अवस्था, शिक्षागत वातावरण, सर्वांगीण विकास आदि

सारांश

शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास एक निश्चित वातावरण में होता है। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त शिक्षागत वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा शिक्षागत वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियाँ विकसित होती है। जन्मजात शक्तियाँ यदि शिक्षा का आधार है, तो वातावरण शिक्षा का माध्यम, खाद एवं जलवायु है। और फल है, बालक का सर्वांगीण विकास। बालक का जब सर्वांगीण विकास हो जाता है तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करता है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। तथा निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का प्रभाव, छात्रों को प्राप्त भौतिक सामग्री, अर्न्तवैयक्तिक विश्वास के आधार पर उच्चकोटि, मध्यम कोटि, निम्न कोटि का पाया गया।

पृष्ठभूमि तथा तर्काधार

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। गिजुभाई बधेका के अनुसार – "शिक्षा में गुणवत्ता होनी चाहिए।" यह बात आज बार–बार दोहराई जा रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा है जो हर बच्चे के काम आये। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सर्वांगीण विकास में समान रूप से उपयोगी हो। बेहतर शिक्षा हर बच्चे की वैयक्तिक विभिन्नता का ध्यान रखती है। यह हर बच्चे को विभिन्न गतिविधियों, खेल और प्रोजेक्ट वर्क के माध्यम से सीखने का मौका देने वाली भी होती है।[1]

यदि हम शिक्षा की गुणवत्ता के विकास पर दृष्टिपात करेंगे तो देखेंगे की प्राचीन युग से लेकर वर्तमान युग तक मानव ने शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में संसाधनों में तीव्र गति से परिवर्तन किया है। अतः राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा के औपचारिक साधनों के रूप में विद्यालयों व कॉलेजों की भूमिका अतुलनीय है।

बी.डी. भाटिया के अनुसार – ''समाज ने शिक्षा के कार्यों को करने हेतु अनेक विशिष्ट संस्थाओं का विकास किया गया है। इन्हीं संस्थाओं को शिक्षा के साधन कहा जाता है।''[2]

विद्यार्थियों के शारीरिक मानसिक, सांवेगिक, नैतिक, आर्थिक एवं आत्मिक विकास के निर्माण के आधार भारतीय विद्यालय, विद्यालयों का वातावरण, विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं विद्यालय में उपलब्ध संसाधन है। छात्रों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा, शिक्षक व शिक्षालयों की महती भूमिका होती है प्रो. डमविल ने कहा है कि – ''शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव आते है जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।''[3]

यदि शिक्षागत वातावरण अनुकूल है तो छात्रों में अपेक्षित गुणों का विकास होगा और वे जीवन में उत्तरोत्तर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जायेंगे तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का परचम लहरायेंगे। परन्तु यदि शिक्षागत वातावरण प्रतिकूल है तो छात्रों में सर्वांगीण विकास कुंठित हो जायेगा। महात्मा गांधी ने ''शिक्षा को सर्वांगीण विकास (शरीर आत्मा तथा मस्तिष्क के विकास) की प्रक्रिया माना है।'' शिक्षाशास्त्री फ्रोबेल वाटसन, न्यूमैन आदि ने बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षागत वातावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। शिक्षाशास्त्री न्यूमैन के अनुसार ''वातावरण द्वारा शारीरिक लक्षण सबसे कम प्रभावित होते है, बुद्धि उससे अधिक, शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्ति उससे भी अधिक, व्यक्तित्व व स्वभाव सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।[5]

ई.जे. रॉस के अनुसार ''वातावरण एक बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।''[6]

शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास एक निश्चित वातावरण में होता है। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त शिक्षागत वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा शिक्षागत वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियाँ विकसित होती है। जन्मजात शक्तियाँ यदि शिक्षा का आधार है, तो वातावरण शिक्षा का माध्यम, खाद एवं जलवायु है। और फल है, बालक का सर्वांगीण विकास। बालक का जब सर्वांगीण विकास हो जाता है तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करता है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अतः निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का प्रभाव, छात्रों को प्राप्त भौतिक सामग्री, अन्तर्वैयक्तिक विश्वास के आधार पर उच्चकोटि, मध्यम कोटि, निम्न कोटि का पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. निम्न संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. केन्द्रीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. निजी विद्यालय के छात्र छात्राओं के सर्वागीण विकास पर शिक्षागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. उच्च संसाधनयुक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव पड़ता है।
2. निम्न संसाधनयुक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव पड़ता है।
3. केन्द्रीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. निजी विद्यालय के छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध प्रविधियाँ

1. **शोध विधि तंत्र –** उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्री द्वारा विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि व अर्द्धसंरचित साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया।
2. **समष्टि (पोपुलेशन) तथा न्यादर्श –** प्रस्तुत अध्ययन जयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में केन्द्रीय व निजी विद्यालय के 50–50 विद्यार्थियों को लिया गया हैं। इनका तुलनात्मक अध्ययन नही किया गया है।
3. **उपकरण तथा तकनीक –** उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में मानकीकृत मापनी एम.एल.शाह व अमिता शाह द्वारा निर्मित एकेडमिक क्लाइमेट डिस्क्रिपशन क्यूशचनईयर ACDQ व स्वनिर्मित मापनी का प्रस्तुत शोध में प्रयोग किया गया।
4. **प्रदत्त संचयन तथा विश्लेषण की प्रविधि –** उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्री द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी परीक्षण व सह–सम्बन्ध को लिया गया हैं।

परिणाम

परिकल्पना 1 : उच्च संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव पड़ता है।

ग्राफ – 1.1

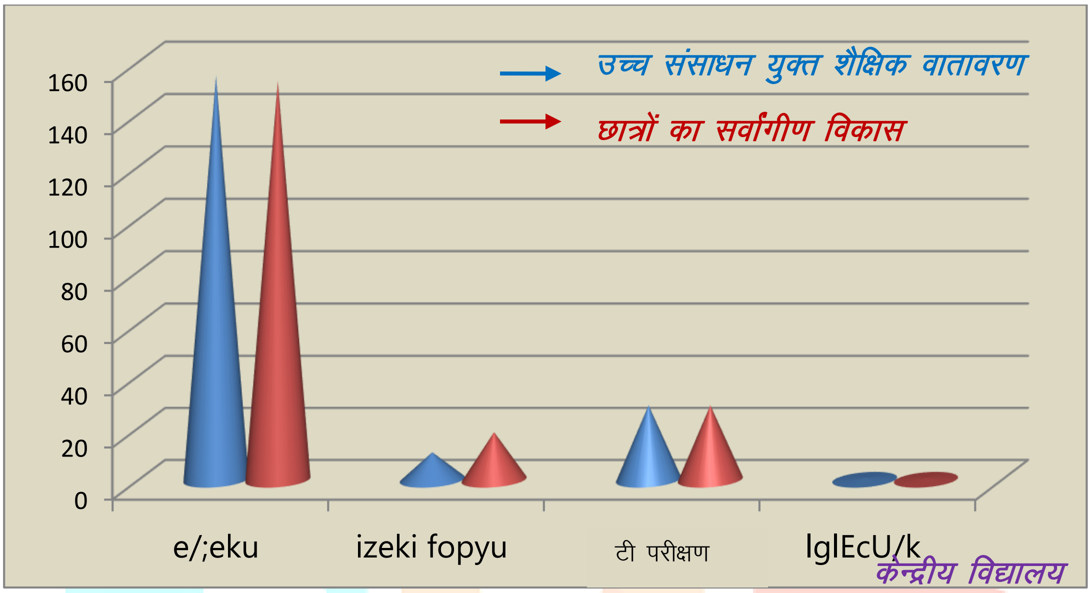

तालिका संख्या – 1.1

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह – सम्बन्ध
उच्च संसाधन युक्त केन्द्रीय विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण		154.66	10.58	28.65	0.85
+	25				
केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों का सर्वांगीण विकास		152.7	18.33		

ग्राफ – 1.2

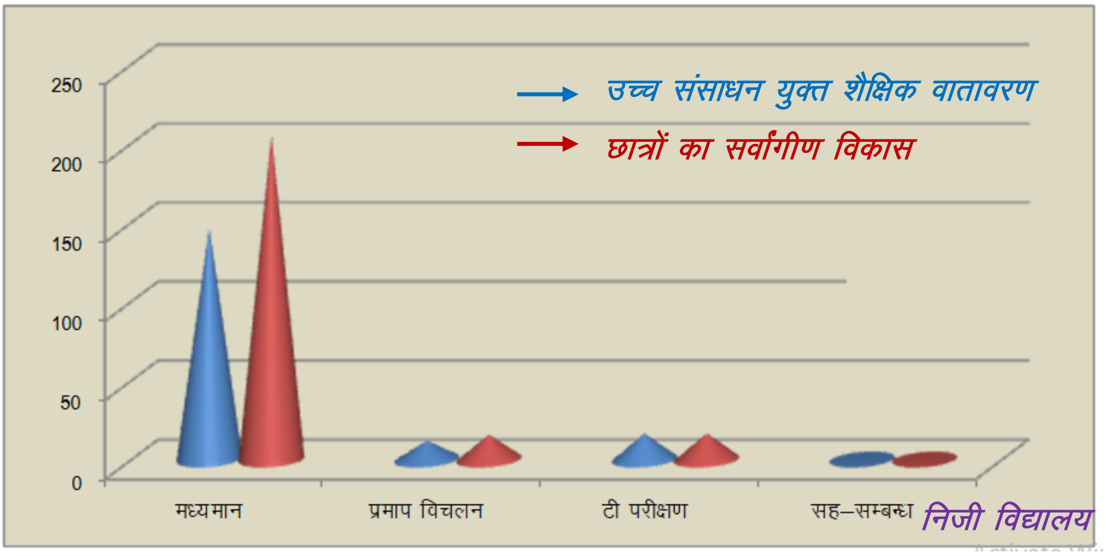

तलिका संख्या – 1.2

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह – सम्बन्ध
उच्च संसाधन युक्त निजी विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण		146.75	11.88		
+	25			16.51	0.79
निजी विद्यालयों के छात्रों का सर्वांगीण विकास		205.55	15.77		

उच्च संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर उच्चकोटि का प्रभाव पड़ता हैं क्योंकि उच्च संसाधन युक्त केन्द्रीय विद्यालय में दोनों (शिक्षागत वातावरण + सर्वांगीण विकास) के बीच का सहसम्बन्ध 0.85 हैं। व उच्च संसाधन युक्त निजी विद्यालय में दोनों (शिक्षागत वातावरण + सर्वांगीण विकास) के बीच का सहसम्बन्ध 0.79 हैं। अतः यह परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पना 2 : निम्न संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव पड़ता है।

ग्राफ – 2.1

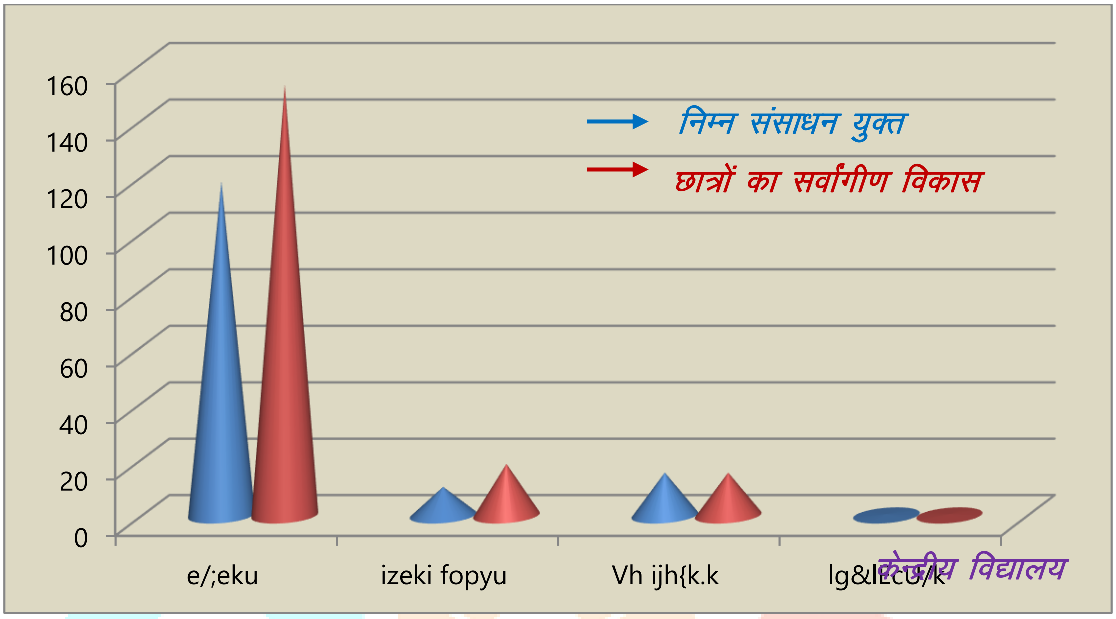

तालिका संख्या – 2.1

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह –सम्बन्ध
निम्न संसाधन युक्त केन्द्रीय विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण + केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों का सर्वांगीण विकास	25	118.41 152.7	10.161 18.33	15.24	+0.54

ग्राफ – 2.2

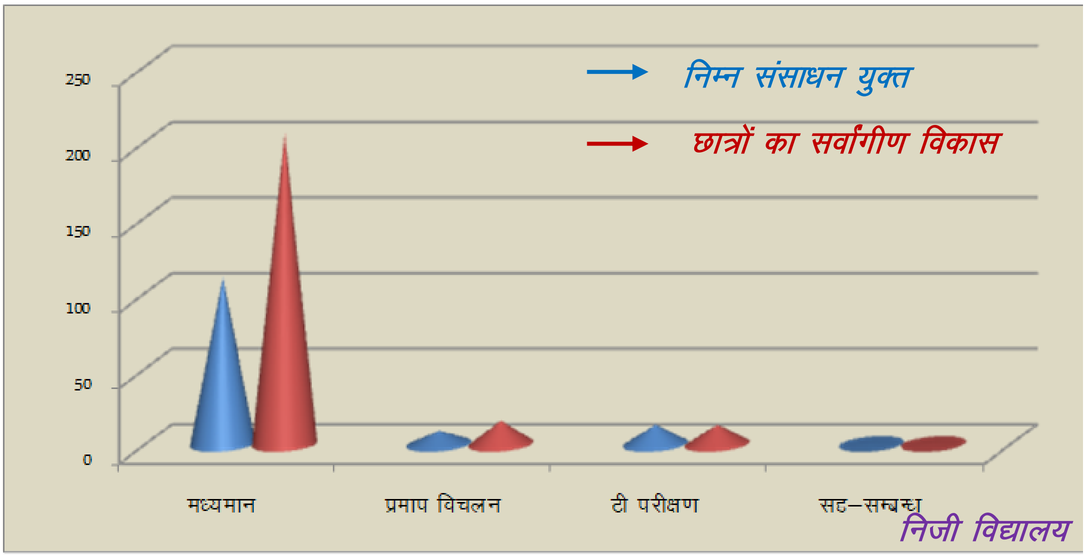

तालिका संख्या –2.2

श्रेणी	**न्यादर्श**	**मध्यमान**	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह –सम्बन्ध
निम्न संसाधन युक्त निजी विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण	**25**	**110.18**	8.88	12.94	+0.58
+					
निजी विद्यालयों के छात्रों का सर्वांगीण विकास		**205.5**	15.77		

निम्न संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर मध्यकोटि का प्रभाव पड़ता हैं। क्योंकि निम्न संसाधनयुक्त केन्द्रीय विद्यालय में दोनों (शिक्षागत वातावरण + सर्वांगीण विकास) के बीच का सहसम्बन्ध + 0.54 है। व निम्नसंसाधन युक्त निजी विद्यालय में दोनों (शिक्षागत वातावरण + सर्वांगीण विकास) कें बीच का सहसम्बन्ध + 0.58 है , अतः यह परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पना 3 : केन्द्रीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ग्राफ – **3.1**

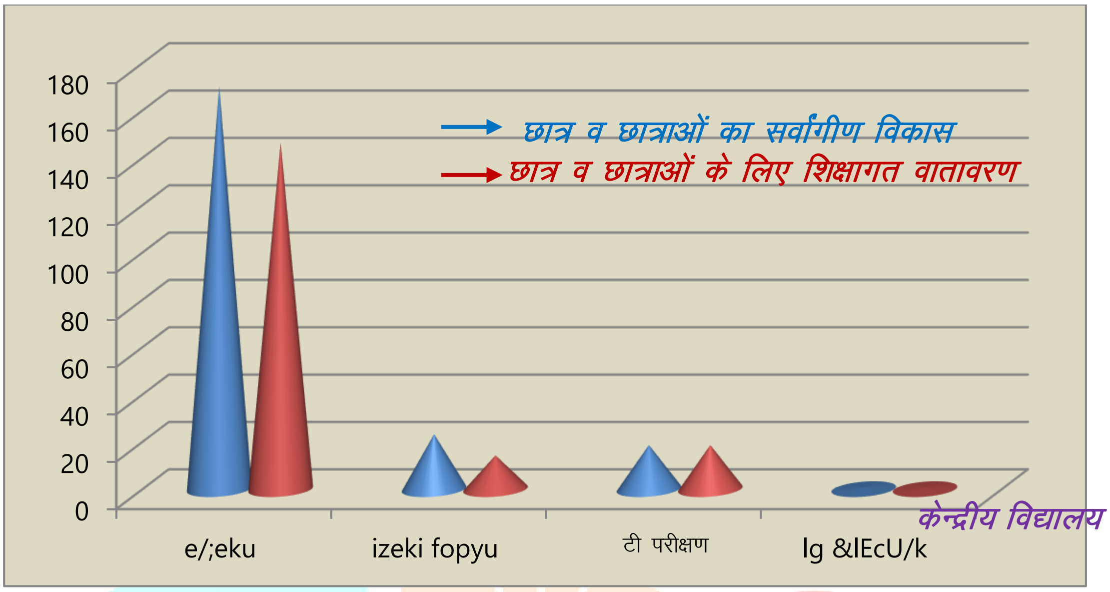

तालिका संख्या –3.1

श्रेंणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह सम्बन्ध
केन्द्रीय विद्यालय की छात्र व छात्राओं का सर्वांगीण विकास + केन्द्रीय विद्यालय का शिक्षागत वातावरण	50	170.35 146.56	26.26 14.28	18.65	0.8

केन्द्रीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का उच्चकोटि का सार्थक प्रभाव पड़ता हैं। क्योंकि केन्द्रीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सर्वांगीण विकास व केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षागत वातावरण के बीच सहसम्बन्ध 0.8 हैं। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पना 4 : निजी विद्यालय कें छात्र–छात्राओं कें सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता हैं।

ग्राफ – 4.1

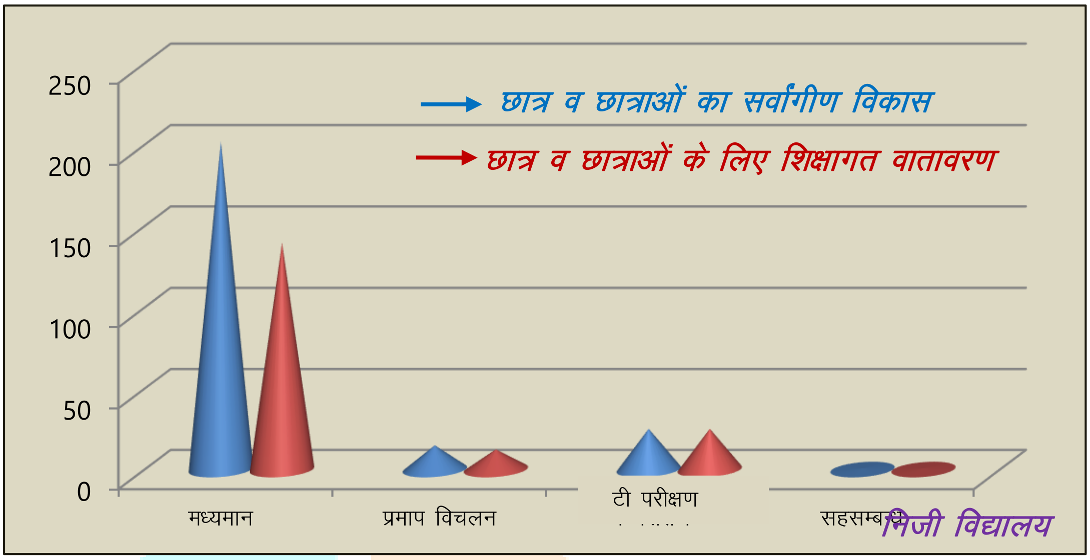

तालिका संख्या –4.1

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी परीक्षण	सह–सम्बन्ध
निजी वि.के छात्र व छात्राओं का सर्वांगीण विकास	50	202.25	15.03	25.27	+0.83
+ निजी विद्यालय का शिक्षागत वातावरण		140	12.53		

निजी विद्यालय के छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का उच्चकोटि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि निजी विद्यालय के छात्र–छात्राओं का सर्वांगीण विकास व निजी विद्यालय के शिक्षागत वातावरण के बीच सहसम्बन्ध +0.83 हैं। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

Reference Table

सहसम्बन्ध के लिए (Table Z)

कोटि	धनात्मक	ऋृणात्मक
पूर्ण	+1	–1
उच्चतर स्तर	+0.75 व+ 1 के मध्य	–0.75 व –1 के मध्य
मध्य स्तर	+0.5 व 0.75 के मध्य	– 0.5 व 0.75 के मध्य
निम्न	+ 0 व 0.5 के मध्य	0 व –0.5 के मध्य

परिणामों की विवेचना एवं अध्ययन के निहितार्थ

1. उच्च संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर उच्चकोटि का धनात्मक प्रभाव इसलिये पड़ता हैं क्योंकि विद्यालयों में कुछ संसाधन उच्चस्तर के हैं। तो उनका बालकों पर उच्चकोटि का प्रभाव पड़ता हैं।
2. निम्न संसाधन युक्त शिक्षागत वातावरण का छात्र के सर्वांगीण विकास पर मध्य कोटि का धनात्मक प्रभाव इसलिये पड़ता हैं क्योंकि शोधकर्त्री ने पाया कि कई विद्यालय ऐसे थे जिनमें पुस्तकालय का भी अभाव था व कम्प्यूटर लैब, खेल का मैदान, खेल सामग्री आदि के उपलब्ध न होने से बालक का विकास तो होता हैं परन्तु औसत स्तर का होता हैं और बालक शिक्षा के क्षेत्र में आई नई तकनीकों से अनभिज्ञ रहता हैं। यही कारण हैं कि उसका विकास मध्य कोटि का होता हैं।
3. केन्द्रीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का उच्च कोटि का धनात्मक सार्थक प्रभाव इसलिये पड़ता हैं। क्योंकि शोधकर्त्री ने पाया कि केन्द्रीय विद्यालयों का विद्यालय भवन काफी विस्तृत क्षेत्र में होता हैं और विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप सभी सुविधायें उन्हें उपलब्ध करवाई जाती है। भौतिक संसाधन में कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, व्यायाम शाला आदि में साधन उचित मात्रा में उपलब्ध हैं।जिनके उपयोग से बालक का शारीरिक ही नही मानसिक विकास भी होता हैं। केन्द्रीय विद्यालयों का वातावरण ऐसा हैं कि बालक नई सूचनाओं के हमेशा सम्पर्क में रहता हैं। और यही कारण है कि शिक्षागत वातावरण बालक को प्रभावित करता हैं।
4. निजी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का उच्चकोटि का धनात्मक सार्थक प्रभाव इसलिये पड़ता हैं क्योंकि विद्यालयों में बालकों को स्तर के अनुरूप सभी प्रकार के संसाधन उपलब्ध करवायें जाते हैं। व बालकों पर भौतिक ही नही मानवीय संसाधनों का भी प्रभाव पड़ता हैं। यही कारण हैं कि निजी विद्यालय के छात्र–छात्राओं पर शिक्षागत वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं।

शिक्षा शास्त्र ,समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों से सम्बन्धित शोध प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नही होते जब तक की इनका सम्बन्धित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ न हो, नही तो शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चला जाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध के शिक्षा में निम्नलिखित निहितार्थ होगें।

शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन इस प्रकार के शिक्षागत वातावरण का निर्माण कर सकेंगे जो बालकों के स्तर के अनुरूप हों व वे अपने विद्यालय के शिक्षागत वातावरण को चार भागों में विभक्त कर उसकी गुणवत्ता कों प्राप्त कर सकेगें जिससें वे बालकों का शारीरिक ,मानसिक ,सामाजिक ,सांवेगिक व चारित्रिक विकास कर सकेगें। शिक्षण संस्थान अपने विद्यालय के भौतिक मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता को भी बढ़ा सकेगें। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को वातावरण के प्रति सजग कर सकेगा। व विद्यार्थी भौतिक व मानवीय संसाधनों के प्रति जागरूक हो सकेगें वे जान सकेगें की अच्छा शिक्षागत वातावरण किस प्रकार से सर्वांगीण विकास कर सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bapodara. Dr. Vishal (2019) : Gijubhai Badheka Prathamik Shiksha Ke Prayog Purush. Red Shine Publication. Pvt. Ltd., Lunawada. P.No. 7
2. Agarwal. Saurabh (2021) : Principles of Education. SBPD publishing House Agra. P.No. 54
3. Parashar. Dr. Madhu. Rinki Agarwal (2021) : Thoughts and Practices in Education. SBPD Publications Agra. P.No. 3
4. Biswas. P. Mahatma Gandhi's Views on peace education journal. (2015) 4 (1), 10-12
5. अस्थाना, बिपिन और श्वेता अस्थाना (2007) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. Goyal, Er. Meera (2021) : Fundamentals of Nutrition and Human Development SBPD Publications Agra. P.No. 142